भाषा, भाषा का प्रयोजन तथा प्रयोजनमूलक भाषा

डॉ0 विनोद कुमार

भाषा सृष्टि की सर्वव्यापकता और अलौकिक प्रकाश का प्रतिमान है। प्रत्येक क्रिया, प्रत्येक क्षण, प्रत्येक परिवर्तन स्वयं में अभिव्यक्ति है और यह अभिव्यक्ति भाषा का स्वरूप है। यह सृष्टि के आरंभ से है और जीवन के प्रत्येक क्षण के साथ गतिमान रहा है। अपने सर्वव्यापी स्वरूप में परिवर्तनों की साक्षी रही भाषा के स्वरूप में भी परिर्वतन हुआ। मूक, सांकेतिक तथा विशिष्ट ध्वन्यात्मकता के परिवेश से आधुनिकता के कलेवर तक इसने सदैव अपना गुणधर्म अक्षुण्ण रखा, और वह गुण धर्म है अभिव्यक्ति का, संचार का और विचारोद्घाटन का। वास्तव में भाषा भावों की अभिव्यंजना का माध्यम है और इसका स्वरूप अत्यंत व्यापक है। पशु–पक्षियों की ध्वनि हो, किसी प्रकार का इंगित हो, संकेत हो या मानवों की ध्वन्यात्मक भाषा हो अथवा सड़कों के किनारे लगाए गए परिवहन संबंधित विभिन्न रंगों की पट्टियाँ हों, ये सभी भाषा ही हैं।